AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

महादेवी वर्मा और शिक्षा शिक्षण के तत्व

ORIGINAL ARTICLE

Author
नन्दकिशोर सिंह
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
निलाम्बर–पिताम्बर विश्वविद्यालय,
मेदिनीनगर, पलामू, झारखंड, भारत

शोध सार

मानव जीवन के विभिन्न लक्ष्य होते हैं, उन लक्ष्यों को प्राप्त करने तथा मनुष्य को शिष्ट बनाने में शिक्षा का मुख्य योगदान होता है। शिक्षा के माध्यम से ही किसी समाज तथा राष्ट्र की उन्नति सम्भव है। व्यक्ति चरित्रवान व सद्गुणी हो तथा समाज के विकास में सहायक हो, ऐसी कल्पना दार्शनिको द्वारा की जाती है, किन्तु इस कल्पना की सार्थकता तो इसे साकार रुप देने में है, जो शिक्षा के सक्रिय सहयोग के बिना असंभव है। किसी व्यक्ति का शिक्षा दर्शन तत्कालीन परिस्थितियों से अप्रभावित नहीं रह सकता। वास्तव में दार्शनिक पर अपने युग की परिस्थितियों का ऐसा प्रभाव पड़ता है कि वह अनायास ही शिक्षा शास्त्री, महान् लेखक एवं लेखिका, कवि एवं कवयित्री बन जाते हैं। ऐसी महान् विभूतियों में महादेवी वर्मा का नाम भारतीय इतिहास में कवयित्री के साथ–साथ दार्शनिक रुप में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। महादेवी ने ही आधुनिक भारतीय संस्कृति को उज्जवल करने के लिए छायावाद की परिस्थितियों को देखते हुए मानव समाज में विभिन्न आदर्शों की स्थापना करने का प्रयास किया। महादेवी का जीवन दर्शन तथा शिक्षा दर्शन ''राम राज्य'' का दर्शन है। जहाँ का हर नागरिक ''परमगति का अधिकारी'' है। जहाँ सुख शान्ति, प्रेम तथा न्याय है। उनका सम्पूर्ण दर्शन सामाजिक जीवन के लिए है। वास्तव में वे व्यावहारिक आदर्शवादी थीं जिसमें ''सत्यम् शिवम् सुन्दरम'' की भावना के सहज में ही दर्शन प्राप्त होते हैं। महादेवी का शैक्षिक दर्शन भारतीय परम्परा पर आधारित है।

मुख्य शब्द

शिक्षा, दर्शन, साहित्य, भारतीय संस्कृति.

प्रस्तावना

भारतीय शिक्षा में उन विभूतियों का महान् योगदान है जिनकी औपचारिक शिक्षा साधारण थी, परन्तु उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से शिक्षा के अभिव्यक्त रूप को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभावित किया है। ऐसी विभूतियों में तुलसी, दयानन्द, विवेकानन्द, टैगोर, जयशंकर प्रसाद, पन्त, निराला एवं महादेवी वर्मा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

आधुनिक शिक्षा पर यदि हम दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण शिक्षा किसी एक युग विशेष की देन नहीं है, अपितु युगों की संचित ज्ञानराशि का कोष है। वास्तव में इन ज्ञान के भण्डार में महान् विद्वानों के विचार व विभिन्न परिस्थितियों के अनुभव जुड़ते गये व इसका क्षेत्र विस्तृत होता गया। कुछ समय पश्चात् शिक्षा परिवार

का ही उत्तरदायित्व नहीं रहा बल्कि गुरूओं द्वारा गुरुकुलों व धार्मिक स्थानों पर दी जाने लगी।

आज धार्मिक संस्थाऐं तथा विद्यालय शिक्षा के औपचारिक साधन के रूप में अपना कार्य कर रहे हैं, कहीं विवेकानन्द, कहीं महात्मा गांधी, कहीं स्वामी दयानन्द, कहीं अरविन्द घोष के आदर्शों पर चलती हुई ये शैक्षणिक संस्थायें विस्तृत रूप धारण कर चुकी है। इन विभूतियों के. शिक्षा दर्शन की कुछ विशेषताऐं रही है, जिनके कारण समाज का दृष्टिकोण प्रभावित हुआ है।

भारतीय वांगमय में महादेवी वर्मा ने भी काव्य एवं गद्य के माध्यम से शिक्षा क्षेत्र में योगदान देकर समाज के दृष्टिकोण को प्रभावित किया। इनकी महान् शैक्षिक उपलब्धियों को उजागर करने के लिए शोधकर्ता ने इस समस्या का चयन किया है। वर्तमान समय में जीवन की जटिलता को देखते हुए आवश्यक है कि शिक्षा का केवल एक उद्देश्य न होकर शिक्षा मानव के सर्वागीण विकास का उद्देश्य लिये हो, जिसके द्वारा व्यक्ति में ज्ञान, आत्मविश्वास की भावना उच्चकोटि की हो सकती हो, जिसके द्वारा व्यक्ति, समाज व राष्ट्र की उन्नति हो सके। इन सिद्धांतों को ध्यान में रखकर महादेवी वर्मा जी का शिक्षा दर्शन मानव का सर्वांगीण विकास में समर्थ है। अतः प्रस्तुत शोध आलेख में महादेवी वर्मा के शिक्षा दर्शन का प्रतिपादन किया, जिसके द्वारा भारतीय संस्कृति, विचारों एवं अपनी संस्कृति की ओर आधुनिक युग का ध्यान आकर्षित करने का दृढ विश्वास प्रकट किया है। अतः महादेवी का शिक्षा दर्शन भारतीय आधुनिक युग के लिए बहुत ही उपादेय है।

महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद, निराला, पन्त, तुलसी, दयानन्द, राधाकृष्णन् आदि दार्शनिकों ने उच्च कोटि के शिक्षा शास्त्री होने का प्रमाण दिया है। इनके शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया है और शैक्षिक क्षेत्र का उन्नति का अधिकतर श्रेय ऐसे ही महान विभूतियों को जाता है। समय व स्थान के अनुसार इनके शैक्षिक विचारों का आधुनिक युग के संदर्भ में अध्ययन करना बहुत महत्वपूर्ण होगा तथा समाज के लिये लाभप्रद भी। महादेवी जी ने शिक्षा रूपी ज्ञान के भण्डार में काफी योगदान दिया है। छायावादी युग की सम्पूर्ण परिस्थितियों के संदर्भ में महादेवी के गद्य व पद्य ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महादेवी वर्मा ऐसी मौलिक विचारिका है जिनके शिक्षा दर्शन तथा चिंतन को भारतीय शिक्षा परम्परा में यथेष्ट स्थान मिलना चाहिए। छायावादी युग के संदर्भ में उनके विचारों का आलोचनात्मक अध्ययन, शिक्षा के क्षेत्र में नवीन तथ्य प्रदान करता है।

महादेवी वर्मा ने काव्य के माध्यम से शिक्षा क्षेत्र में योगदान देकर समाज के दृष्टिकोण को प्रभावित किया। महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कवयित्रियों में से एक है। शिक्षा दर्शन के क्षेत्र में जितने अधिक सुदृढ विचार महादेवी ने प्रकट किये है उतने साधक विचार अन्य किसी शिक्षा दार्शनिकों में ही देखे जा सकते हैं।

महादेवी वर्मा छायावादी युग की सर्वश्रेष्ठ कवयित्री है। शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय एकता, समाज के प्रति प्रेम भावना, नारी भावना एवं प्रकृति प्रेम आदि विषयों पर इनके शिक्षा दर्शन की छाप स्पष्ट झलकती हैं ।

मनुष्य की आत्माभिव्यक्ति का उत्कृष्ट साधन काव्य है। काव्य को माध्यम बनाकर ही कवि एवं कवयित्री अपनी अनुभूति के सौन्दर्यमय चित्रण की प्रस्तुति करते हैं। कभी–कभी विद्वान् लोग काव्य को परिभाषित करते हुए उसे शास्त्रीय सीमाओं में परखने लगते हैं। जब किसी काव्य की लौकसिद्धि बढ़ती है, यहां तक की वह लोक जीवन का आधार बनकर उभरता है तब बुद्धिजीवी उसके पक्ष व विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत करने लगते हैं।

महादेवी वर्मा ने छायावादी काव्य में रमणीय कल्पना विधान की ओर विशेष रूझान तथा रमणीयता के प्रति विशेष आग्रह के कारण ही छायावादी कल्पना विधान में बुद्धि की अपेक्षा बाह्य संवेदनों की प्रधानता है। छायावादी, कविता न लोकमंगल की सौद्देश्य से लिखी गई थी और न उस सृजन में सहानुभूति का अभाव था, अतः उसके कल्पना विधान में स्वभावतः बुद्धि का अंश अधिक नहीं है। इस प्रकार बुद्धि प्रधान कल्पना और संवेदनशील कल्पना विधान में उन ऐन्द्रिय प्रत्यक्षों की प्रधानता रहती है जो मानव चित को प्रभावित करने में पर्याप्त समर्थ होते हैं। छायावादी कविता संवेदनशील कल्पना विधान से परिपूर्ण होने के कारण मानव चित्त को प्रभावित करने में विशेष समर्थ है।

शिक्षा में ऐसी शक्ति होती है, जो मानव में मनुष्यता जागृत करती है। उसके व्यक्तित्व के निर्माण में योग देती

है। इस प्रकार कवि एवं कवयित्री माता–पिता व गुरु की भांति सुखी, समृद्ध व विकासोन्मुख समाज की संभावनाओं को सुदृढ़ बनाते है। स्वस्थ दर्शन वाली कवयित्री एक स्वस्थ व्यक्तित्व व उनके साथ स्वस्थ समाज की रचना में महान् योगदान दे सकती है।

इस दृष्टिकोण से महादेवी वर्मा कवयित्री होने के साथ–साथ एक महान् दार्शनिक विचारिका, समाज सुधारक भी थीं महादेवी वर्मा के दर्शन में राजनीति दर्शन, धर्म दर्शन कर्मयोग दर्शन, योगदर्शन इत्यादि सभी सम्मिलित है। महादेवी वर्मा जी ने अपने शिक्षा दर्शन द्वारा नैतिक गुणों का विकास कर जाति भेद को दूर करने का प्रयास किया जो एक देश एवं राष्ट्र के लिए वरदान है।

शिक्षा दर्शन की एक शाखा है। मनुष्य के दर्शन का ही शिक्षा पर पूर्ण प्रभाव पड़ता है। दर्शन में जो तत्वमीमांसा तथा मूल्य मीमांसा आदि पद्धतियां है उसके अनुकूल देखा जाता है कि व्यक्ति विशेष के दृष्टि, जगत् आत्मा–परमात्मा आदि के विषय में क्या विचार हैं तथा उन विचारों के अनुसार वह शिक्षा को क्या देना चाहती है, शिक्षा क्या है? व दर्शन शिक्षा को किस प्रकार प्रभावित करता है। इन सबके विषय में महादेवी वर्मा के जो दार्शनिक विचार है उनका विवेचन समीचीन है।

शिक्षा दर्शन के अध्ययन की एक प्रचलित विधि वर्णनात्मक पद्धति है। इसमें शिक्षा के विभिन्न अंगो की दृष्टि से किसी शिक्षा शास्त्री के विचारों का वर्णन किया जाता है। शिक्षा का उदद्देश्य, पाठ्यक्रम, गुरुशिष्य, का पारस्परिक संबध शिक्षण विधि, अनुशासन तथा विद्यालय है।

महादेवी वर्मा लोकमानस की सामान्य व असामान्य, अच्छाई, बुराई साधारण व असाधारण दोनों का समन्वय है। वास्तव में जीवन का इतना व्यापक परिचय विस्तृत संदर्भों की जानकारी हेतु अन्यत्र दुर्लभ है। यह उसी महाकवयित्री के लिए संभव है. जिसका व्यक्तित्व जीवन रूपी पाठशालाओं में बना हो व जिसकी अनुभूति अनुभव की कोख में जन्मी हो। महादेवी ने काव्य के रूप में शिक्षा दर्शन के विभिन्न भागों–शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, अध्यापन, शिक्षण विधियों के क्षेत्र में जो योगदान आदि शिक्षा प्रक्रिया के तत्वों को लेकर शिक्षा दर्शन का विवरण प्रस्तुत किया है वह शिक्षा के लिए उपयोगी होती है।

दर्शन का जन्म जिज्ञासा, संशय और जीवन के प्रति उदासीनता का परिणाम माना जाता है। दर्शन शब्द संस्कृत में ''दृश्'' घातु से बना है, जिसका अर्थ है, देखना। यह दर्शन इस स्थूल जगत को समझने तथा इसकी समस्यायें सुलझाने की एक कसौटी है। अतः दर्शन का अभिप्रायः उस परम् सत्ता से है जो सृष्टि के विभिन्न पहलुओं में दृष्टिगोचर होती है।

दर्शन शब्द अंग्रेजी भाषा के फिलोसफी शब्द का रूपान्तर है। इस शब्द की उत्पति ग्रीक भाषा के ''फिलोस'' तथा ''सोफिया'' शब्द से हुई है। ''फिलोस'' का अर्थ है प्रेम या अनुराग। ''सोफिया'' शब्द का अर्थ है–ज्ञान। इस प्रकार (फिलोसफी) दर्शन का अर्थ है–ज्ञान अनुराग अथवा ज्ञान का प्रेम। इस दृष्टि से ज्ञान व सत्य की खोज करना तथा उसके वास्तविक स्वरूप को समझने की कला को ''दर्शन'' कहते हैं।

किसी कार्य को करने से पूर्व उस कला को प्रयोग करने वाले व्यक्तियों को ''दार्शनिक'' कह सकते हैं। दर्शन और जीवन का अभिन्न सम्बन्ध है। दर्शन के अभाव में जीवन अधूरा है। दोनों ही एक दूसरे के पुरक है। अतः यह स्पष्ट है कि दर्शन तथा जीवन का घनिष्ठ सम्बन्ध है, दोनों की सत्ता एक दूसरे पर आश्रित है। एक के बिना दूसरे का कोई अस्तित्व नहीं है। जीवन का कोई भी पहलू इसके प्रभाव से बचा नहीं है। दूसरी और जीवन का कोई ऐसा अंग नहीं, जिसने दर्शन के चिन्तन को सामग्री प्रदान न की हो। अनेक अनुसंधानों के उपरान्त दर्शन प्रदत्त सत्य जब जीवन को प्राप्त होता।

अतः मानव जीवन में दार्शनिकता का बहुत महत्त्व है। दर्शन के द्वारा ही मनुष्य चिन्तन व मनन करता है जो आत्मा–परमात्मा के मिलन में पूर्ण रूप से सहायक है। सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि विषमताओं में समरसता केवल दर्शन के द्वारा ही संभव है। दर्शन ही एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति विषमताओं में

समरसता, अनेकत्व में एकत्व, आत्मा में परमात्मा, दुःख में सुख, असन्तोष में सन्तोष की भावनाओं की जागृति कर मानव जीवन को उत्कृष्ट बनने के लिए प्रेरित करता है। यही कारण है कि जीवन में दर्शन का अत्याधिक महत्व है। भारतीय दर्शन से प्रभावित होकर महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद, निराला जी. सच्चे समाज सुधारक, दार्शनिक तथा बहुत बड़े साहित्यकार व महाकवि कहलाए।

मानव जीवन को सुन्दर एवं सौम्य तथा आनन्दमय बनाने की प्रवृति प्रत्येक मानव में नैसर्गिक होती है। प्रत्येक मानव प्राणी की यह आन्तरिक प्रेरणा होती है कि उसका जीवन सुखमय तथा आनन्दमय व्यतीत हो। यह कल्पना निःसन्देह होती है कि सुख प्राप्ति की कल्पना प्राकृतिक होती है और यदि व्यक्ति की मानसिक व आत्मिक शक्तियों का विकास नहीं हो पाया तो शारीरिक सुख की अनुभूति काल्पनिक ही रह जाएगी। अतः मानव शक्तियों के विकास का एकमात्र साधन विद्या है। शिक्षा के द्वारा ही मानव अपने जीवन को सुन्दर एवं आनन्दमय बना सकता है। वास्तव में शिक्षा मानव जीवन के लिए आवश्यक है। अतः अन्य प्राणियों की अपेक्षा मानव को शिक्षा की अधिक आवश्यकता है, क्योंकि एक तो उसका वातावरण बहुत विस्तृत है और दूसरे उसका शैशव काल व व्यस्कावस्था का समय इतना दीर्घ है कि जीवन की विभिन्न क्रियाओं में भाग लेने की सामर्थ्य प्राप्ति के लिए दीर्घकालीन शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है। शिक्षा द्वारा मनुष्य अच्छे तथा बुरे में भेद करने की योग्यता प्राप्त करता है, इतना ही नहीं यह जीवन के उच्चतर मूल्यों का अनुभव प्राप्त करता है तो जीवन उसे व्यवहार में लाता है तथा प्रयोग के पश्चात् प्रश्नों को पुनः विचारार्थ दर्शन को सौंप देता है। अतः परमत्त्व सैद्धान्तिक रूप हमे दर्शन शास्त्र में प्राप्त होता है, किन्तु उसका व्यावहारिक रूप अपने ही जीवन में मिलता है और वे दोनों तत्त्व मिलकर उस परम तत्त्व का अनुभव करते हैं। इस प्रकार जीवन और दर्शन एक ही हो जाते है। विद्वानों ने भारतीय दर्शन को दो भागों में विभाजित किया है पहला आस्तिक एवं दुसरा नास्तिक।

भारतीय दर्शन शास्त्र तत्त्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा तथा साधन पक्ष के द्वारा ही उपर्युक्त सभी पक्षों का प्रतिपादन कर लेते हैं।

भारतीय दार्शनिक विचारों और मान्यताओं का महादेवी वर्मा के शिक्षा दर्शन पर प्रभाव पड़ा। उन्होंने भारतीय दार्शनिकों, मत–मतान्तरों और साधकों से सम्पर्क स्थापित किया। तत्कालीन कलुषित वातावरण, राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में विषमता को देखकर महादेवी जी एकत्व एवं समरसत्ता की भावना की ओर उन्मुक्त हुई।

सभी ओर दुःख की ज्वाला प्रज्वलित थी। सभी वर्ग ''मैं'' में उलझकर, घृणा, द्वैष, वैर, ईर्ष्या आदि के द्वारा परस्पर अन्य व्यवहार में लगे हुए थे। मनुष्य मनुष्यता का परित्याग कर अमानुषिक एवं हिंसक कार्यों में संलग्न है। महादेवी जी ने इस सार्वजनिक दुःख को निजी दुःख बना लिया। दुःख से छुटकारा पाने के लिये किया गया प्रयास ही दार्शनिक प्रयत्न कहलाता है।

महादेवी ने हमारा क्या स्वरूप है, ब्रह्म क्या है? आत्मा क्या है? आत्मा परमात्मा का क्या सम्बन्ध है? जीवन का पर लक्ष्य क्या है? तथा आत्म संयम से परमत्व की उपलब्धि हो सकती है आदि प्रश्नों को सुलझाने के लिए दार्शनिक सिद्धान्तों की प्रतिपादन किया। इन्हीं दार्शनिक सिद्धांतों को महादेवी ने शिक्षा दर्शन का नाम दिया।

अतः दोनों का शिक्षा के क्षेत्र में दृष्टिकोण बहुत ही विस्तृत है। वे मानव समाज व राष्ट्र का कल्याण चाहते हैं। दर्शन व शिक्षा का अर्थ एवम् उनके सम्बन्धों को स्पष्ट किया गया है। सत्य कि तर्कपूर्ण व्याख्या ही दर्शन है। भारतीय दार्शनिक विचार व मान्यताओं का महादेवी के शिक्षा दर्शन पर काफी प्रभाव पड़ा है। तत्कालीन परिस्थितियों का दोनों ही दर्शनिकों पर सीधा प्रभाव पड़ा जिसके कारण उनका दार्शनिक दृष्टिकोण व्यवहारवादी और आदर्शवादी बन गया। मानव जीवन में शिक्षा का बहुत महत्व है। इसी के द्वारा वह अपने भौतिक व अभौतिक ज्ञान को आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित करता है। अतः दर्शन और शिक्षा का रागात्मक सम्बन्ध है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जो समस्याएं तत्कालीन समाज में व्याप्त थी. उससे कहीं अधिक वर्तमान में व्याप्त

है। इसका निराकरण महादेवी के शिक्षा दर्शन के अध्ययन से संभव हो सकता है और उपयुक्त शिक्षा व्यवस्था की स्थापना हो सकेगी। अतः महादेवी शिक्षा दर्शन न केवल भारतीय अंतर्रात्मा का प्रतिनिधित्व करती है. अपितु मानवीय मूल्यों के आधार पर शिक्षा व्यवस्था उपस्थित कर हमारी युग चेतना का प्रतिनिधित्व भी करता है।

महादेवी के जीवन वृत्तान्त और जीवन दर्शन का युगान्तकारी महत्व है। महादेवी ने जाति–पाति, भेदभाव, अन्धविश्वास, रूढ़िवादिता, बाहरी आडंबर के विरूद्ध बनावट की ओर वर्गहीन समाज की स्थापना पर बल दिया है।

महादेवी जी का शिक्षा दर्शन जीवन उपयोगी, व्यवहारिक तथा उद्देश्यपूर्ण है। अनेकत्व में एकत्व की स्थापना करना इनका उद्देश्य है। इनका शिक्षा दर्शन सत्यम, शिवम, और सुन्दरम का समन्वय है और तत्कालीन समाज का घोषणा पत्र है।

निष्कर्ष

शिक्षा दर्शन दार्शनिक के अनुभवों का योगफल है। वह उसके मस्तिष्क में उपस्थित आदर्श समाज की परिकल्पना पर आधारित होता है। प्रजातंत्रीय समाज को आदर्श माना है और शिक्षा, क्षेत्र में, उसके क्रियात्मक स्वरूप के प्रतिपादन पर बल दिया है। महादेवी ने इसी समाज के लिए जनमानस को काव्य के माध्यम से शैक्षिक ज्ञान प्रदान किया है ताकि व्यक्तिगत्त और सामाजिक जीवन को समन्वय द्वारा उत्तम बनाया जा सके। इन्होंने अपने युग की परिस्थितियों का सजीव अनुभव प्राप्त करके स्वस्थ सम्राज के निर्माण के लिए काव्य रूपी साधन का सहारा लिया।

महादेवी का युग राजनैतिक पराजय, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक दृष्टिकोण से संक्रमण काल था। शिक्षा क्षेत्र में इन्होने अनेक यथार्थ, सुदृढ़ और आदर्शवादी, व्यावहारिक विचार उन्होनें प्रतिपादित किए। महादेवी का शैक्षिक दर्शन समदर्शी है जो स्वस्थ और वर्ग हीन समाज की स्थापना करना शिक्षा का अन्तिम उद्देश्य मानते हैं दूसरी और महादेवी ने आत्म तत्व को सत्य माना है। इन्होनें अनेकता में एकता की स्थापना पर बल दिया जो भारतीय संस्कृति का प्राण है।

सन्दर्भ सूची

1. सिंह, निरंजन कुमार (1991) *माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण,* राजस्थान अकादमी, जयपुर, पृ. 17–22।
2. नगेन्द्र (सं) (1996) *भारतीय साहित्य कोश,* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. 29–32।
3. पाण्डे, रामशकल (2010) *शिक्षा दर्शन,* विनोद मंदिर, आगरा, पृ. 109–12।
4. सहाय, रामजी लाल (2005) *महोदवी और शिक्षा दर्शन,* ज्ञानदा प्रकाशन, पटना, पृ. 54–59।
5. विदुशायल, गोविन्द (2007) *महादेवी की विचारधारा,* भारती प्रकाशन, पटना, पृ. 87–98।

––==00==––